



## सामान्य अध्ययन

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट  
Time allowed: 1 Hour 30 Minutes

अधिकतम अंक: 125  
Maximum Marks: 125

Name: Mudita Sharma

Mobile Number: \_\_\_\_\_

Medium (English/Hindi): \_\_\_\_\_

Email: \_\_\_\_\_

Center & Date: \_\_\_\_\_

UPSC Roll No.: \_\_\_\_\_

### प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

### QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

*Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:*

*All the questions are compulsory.*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.*

केवल मूल्यांकनकर्ता द्वारा भरा जाए (To be filled by Evaluator only)

Question Number	Marks
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
Grand Total (सकल योग)	

मूल्यांकनकर्ता (हस्ताक्षर)  
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्ता (हस्ताक्षर)  
Reviewer (Signature)



## Feedback

- |   |  |
|---|--|
| 1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)      | 2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)     |
| 3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)  | 4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)                 |
| 5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता) | 6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता) |

1. "जहां सादगी नहीं, वहाँ महानता नहीं"

Where there is no simplicity, there is no greatness

1893 के शिकागो धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद के लिये बजी तालियों की गड़गड़ाहट और 2020 के पद्मश्री सम्मान समारोह में 'तुलसी गौड़ा' के लिये बजी तालियों ने एक धारणा के आज भी प्रासंगिक बने रहने की पुष्टि की है, वह यह कि व्यक्ति अपनी पृष्ठभूमि से उठकर, वहाँ से जुड़े रहकर भी महान बनता है तो उत्तम कारण है उसकी महान सोच और उस सोच के अनुरूप किये गये उसके महान कार्य।

जहाँ शिकागो धर्म सम्मेलन में बड़े से बड़े धर्मज्ञानियों ने क्लिष्ट-दुरुह शब्दों में धर्म दर्शनों की व्याख्या की, वहीं सामान्य गैरज्जावहर पढ़ने स्वामी विवेकानंद ने दो सरल शब्दों "मेरे भाईयों और बहनों" से पूरी धर्मसभा में सबको बता दिया कि धर्म की महानता उसकी सरलता में ही निहित है। इसी तरह तुलसी गौड़ा जो अपनी संस्कृत-हलन्की जनजाति के परंपरागत वस्त्रों में राष्ट्रपति भवन में पुरस्कार ले रही थीं, इस बात की पुष्टि की कि महानता बाहरी चमकमते पाश्चात्य वस्त्रों में नहीं बल्कि अपने कर्म में निवास करती है।



आज की दुनिया में जहाँ हर व्यक्ति अपने बाहरी आडंबरों से महान बनना चाहता है वहाँ यह आवश्यक हो जाता है कि हम महानता के उन आधारभूत पैमानों पर वापस लौटें जो हमें 'वास्तविक महानता की सहजता' और 'आभारी महानता के सायासता' में श्रेष्ठ करा सके। क्या आज के अभिक्तावादी चलन के अनुसार केवल चमचमाते वस्त्र पहनना, जटिल शब्दों व विचारों से भ्रमना, स्वयं को सबसे 'यूनिक' व सर्वश्रेष्ठ बताना, सोशल मीडिया पर लाखों फॉलोवर्स हेमा एवं खुद की महानता का खुद उचार करना ही वास्तविक महानता है ?

जहाँ आज के तथाकथित महान लोगों के पैमानों पर ही महानता की कसौटी को समेटा जा रहा है वहीं हमें समझने की आवश्यकता है कि महानता की कुछ शाश्वत कसौटियाँ हैं जो 'स्थानमालनिरपेक्ष' हैं, जो उल्लेख समाज व संस्कृति में स्वीकृत हैं क्योंकि समय-2 पर हर समाज, संस्कृति व राष्ट्र में 'महानता' की परामर्श तक पहुँचने वाले उन सभी लोगों में कुछ साझे गुण थे जैसे - साहस, विनम्रता, प्रगतिशीलता और सादगी।

उम्मीदवार को इस  
हाशिये में नहीं लिखना  
चाहिये।  
(Candidate must not  
write on this margin)

सादगी केवल बाहरी नहीं जो आपके कपड़ों से तय हो बल्कि सादगी विचारों में, सादगी शब्दों में तथा सादगी आपके कृत्यों में क्योंकि इन तीनों में से किसी भी एक स्तर पर सादगी के अभाव से विषमता पैदा होगी जो आवश्यक रूप से महानता में बाधा बनेगी। इस संदर्भ में महात्मा गांधी ने कहा भी है कि

"आपकी सोच, आपके शब्द, आपके कर्मों में असंगतता ही वास्तविक दुश्मनी है।"

विचारों की सादगी का ~~सर्वश्रेष्ठ~~ उदाहरण हम किसी भी दार्शनिक की सरल प्रवचनार्थों में देख सकते हैं। दर्शन को भारी भरकम शब्दों से लदने वाला दार्शनिक महान नहीं होता बल्कि ~~जटिल~~ विचारों को सरल शब्दों में कहने से ही जनता के मर्मस्थल तक पहुँच सुनिश्चित की जा सकती है। सुक्रात, प्लेटो तथा आस्तू इसका पालन करते दिखते हैं जहाँ सुक्रात सरल शब्दों में दर्शन की गहरी से गहरी बात सरलता से संश्लेषित कर देते हैं। एक महान शिक्षक भी वही माना जाता है जो जटिल प्रवचनार्थों को सरलतम रूप में छात्रों को सिखा दे।

उम्मीदवार को इस  
हाशिये में नहीं लिखना  
चाहिये।  
(Candidate must not  
write on this margin)



पश्चिमी वैज्ञानिक व दार्शनिक Feymann ने उसी संबंध में एक अवधारणा प्रस्तुत की जिसे आज Feymann Method के नाम से जाना जाता है। उनका कहना था कि सीखने और सिखाने की महानता उसी में है कि जटिल से जटिल सिद्धांतों को तोंडर सरल शब्दों में स्वयं समझना तथा सरल शब्दों में ही किसी अन्य को समझाना, जहाँ आप इस प्रक्रिया में एक भी कठिन शब्द इस्तेमाल करते हैं इसका अर्थ है कि आप एक महान लर्नर और शिक्षक नहीं हैं।

~~महा~~ भक्ति संतों के अमूर्त आंदोलन में हम यह सादगी विशेष रूप से देख सकते हैं। दरअसल यह आंदोलन और संत महान बने ही इसीलिए क्योंकि उन्होंने आम लोगों के बीच में रहकर ही, उन्हीं की सरल भाषा में, उन्हीं के तरीकों से गहरी से गहरी बातों को सहजता से अभिव्यक्त कर दिया। इस संदर्भ में तुलसीदास जी कहते भी हैं - सूधे मन, दूधे वचन, सूधि सब करतूति। कबीरदास जी का तो नाम ही विशेषतः इसी संदर्भ में लिया जाता है क्योंकि उन्होंने तत्कालीन समाज की समस्याओं

उम्मीदवार को इस  
हाशिये में नहीं लिखना  
चाहिये।  
(Candidate must not  
write on this margin)

को बहुत सरल भाषा में गहरे अर्थों में कहा। जैसे उदाहरणतः -

माला फेरत जुग भया, मिरा न मन का फेर,  
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर।

विचारों और शब्दों की सादगी व महानता का अगला चरण है सामान्य मूर्त्यों को महानता से करना। एक महान नेता का ये सबसे बड़ा गुण है कि वह स्वयं अपने उदाहरण के माध्यम से महानता को परिभाषित करता है। जैसे महात्मा गांधी दरअसल स्वतंत्रता आंदोलन में इसलिये सभी से भिन्न बने क्योंकि उन्होंने पहले के नेताओं की तरह से जनता से कटाव नहीं बल्कि जुड़ाव की कोशिश की और उसी क्रम में उन्होंने अपने वक्त्रों का भी त्याग किया जो अंततः उनकी महानता का एक कारण बना क्योंकि मंचों पर बैठे बैठे नेताओं के प्रति जनता की शरणागतता और एक धीमी परने लकड़ी टैम्कर चलने वाले व्यक्ति के प्रति अतिउत्साह दिखाता है कि जनता के लिये महान वह है जो उनके जैसा दिखाता है लेकिन फिर भी अलग है। इसी संदर्भ में आइंस्टीन ने कहा भी है कि

उम्मीदवार को इस  
हाशिये में नहीं लिखना  
चाहिये।  
(Candidate must not  
write on this margin)



“जाने वाली पीढ़ियाँ शायद ही यकीन करें कि इस धरती पर पैदा होने वाला ये हाँड माँस का पुत्रा एक महान व्यक्तित्व था।”

महात्मा गांधी की सादगी और विमहानता की इसी परंपरा को आगे बढ़ाया पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने, एक महान वैज्ञानिक, एक महान शिक्षक और तत्कालीन राष्ट्रपति जब अपना कार्यकाल पूरा करते निकलते तो अपने हाथ में सिर्फ एक बूटैस जिसमें कुछ कपड़े, घड़ी और कुछ किताबें थी। ये होती हैं महानता, सरल महानता जिस पर कोई यकीन नहीं कर पाए।

लेकिन आज की दुनिया में कई लोग महानता की पालना की अपेक्षा केवल दिखावे में विश्वास करते हैं जैसे हम देखते हैं कि धोलासा दान करने के बाद लोग सैल्फी लेकर सोशल मीडिया पर वाहवाही लूटने में ज्यादा करते हैं। ऐसे ही कुछ लोग पर्यावरणविद् होने का दिखावा तो करते हैं लेकिन वास्तव में दैनिक जीवन में वो सभी कार्य करते हैं जो एक गृह के पर्यावरण को इधर करे। कुछ शब्दों के माध्यम से कॉस्मेटिक प्रॉडक्ट्स का प्रचार कर सुंदरता की महानता को एक विशेष संपर्क में परिभाषित करने का प्रयास किया जाता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।  
(Candidate must not write on this margin)

अतः यहाँ महत्वपूर्ण है कि पहले ही महानता की वास्तविक कसौटियों पर खरा उतरें और ये महानता केवल दिखावे के लिये प्रसिद्धि प्राप्ति का साधन मात्र है न होकर सामाजिक कल्याण के किसी बड़े उद्देश्य पर आधारित हो तथा जिसका प्रचार स्वयं के गुंठ मियाँ मिट्टू बनने की अपेक्षा सामाजिक स्वीकृति से लब्ध हो। इसी संदर्भ में कवि ने लिखा है:-

महान नहीं है तू  
केवल महान होकर  
है महानता उसी में  
सरल, सत्य, सुन्दरमय।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।  
(Candidate must not write on this margin)



4.

उम्मीदवार को इस  
हाशिये में नहीं लिखना  
चाहिये।  
(Candidate must not  
write on this margin)

प्रश्न

जीवन में दो त्रासदियाँ हैं। एक उन्हें दितनी स्वादित  
न पाने की, दूसरी पाने की।

उम्मीदवार को इस  
हाशिये में नहीं लिखना  
चाहिये।  
(Candidate must not  
write on this margin)

एक बगल में चाँद होगा  
एक बगल में रौटियाँ  
एक बगल में नींद होगी  
एक बगल में लोरियाँ  
हम चाँद चें!!! हम चाँद पें!!!  
रौटी की चार तान के  
सो जायेंगे... सो जायेंगे...  
और नींद से बह देंगे  
लौरी कल सुनने जायेंगे... - - -

'पीयूष मिश्रा' की यह कविता कवि  
की एक विशेष स्वादित को उदरित करती है  
जिसमें वह अपनी स्वादित की कल्पना के प्रति  
स्पष्ट भी है और उत्साहित भी। लेकिन क्या  
वाकई सभी व्यक्ति जीवन का एक निश्चित उद्देश्य,  
स्वादित या परम लक्ष्य निधारित करके पाते हैं?



इस संबंध में कुछ संभावनाएँ इस प्रकार हैं :- वे व्यक्ति जो अपने जीवन में लक्ष्य की रक्षा कया है यही नहीं जान पाते। वे व्यक्ति जिन्होंने अपने जीवन की रक्षा के बारे में नहीं जान लिया है। जो व्यक्ति अपने जीवन की रक्षा के बारे में जान चुके हैं उसमें दो प्रकार की संभावनाएँ हो सकती हैं। पहला वे जो उसे प्राप्त कर चुके हैं और इतरा वे जो प्राप्त नहीं कर पाएँ हैं। क्या इनमें से कोई भी संभावना त्रासदी है या नहीं? जीवन की त्रासदी क्या है?

इस भागती दौड़ती दुनिया में जब व्यक्ति रोज सुबह से शाम वही नौकरी, वही मज़दूरी, वही दिहाड़ी करता है लेकिन एक दिन जब वह बँका यह सोचता है कि मैं ये सब क्यों कर रहा हूँ! उस दिन उसका जी उचटने लगने लगता है और वह हर जगह बँचने टोकर घूमने लगता है। दरअसल यही जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है। कम से कम वह व्यक्ति जो अपने जीवन की रक्षा को जानता है वह उस दिशा में प्रयास तो करेगा लेकिन दिशाहीनता से बड़ी त्रासदी क्या होगी?

इसी संबंध में एक कविता है :-

आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है,  
प्लसनें अपनी ही बनाकर आप ही फसता है  
फिर बँचने टोकर रात जगता है।

यही सबसे बड़ी उत्सन्न है, यह तय करना कि जीवन में आप क्या चाहते हैं? हम देखते हैं कि कभी कभी बहुत ऊँचे पदों पर बैठे लोग भी असंतुष्ट नज़र आते हैं और जीवन में निराशा हतोत्साहित होते हैं। स्टीव जॉब्स जो अपने व्यापार के आरंभिक वर्षों में सफल किन्तु असंतुष्ट आरंभ थे, वे भारत आए, कुछ समय खुद के साथ बिताए और उन्हें जीवन की दिशा मिल गई उसके बाद उन्होंने अमेज़न जैसी विश्वस्तरीय कंपनी बनाई और प्रसिद्धि पाई।

लेकिन जीवन का उद्देश्य तय करना सरल नहीं होता। फिर भी यदि इसे तय भी कर लिया जाए तो दो संभावनाएँ हमेशा बनी रहेंगी, वे ये कि या तो हमारी वे आकांक्षा पूरी हो जायेगी या अधूरी रह जायेगी।



जीवन में कुछ लोग रुक राह चुन भी लेते हैं, उस राह पर चल भी लेते हैं लेकिन फिर भी उन्हें दुख ही रहता है क्योंकि रुक बार अपनी सफलता की यात्रा पर निकल चुके व्यक्ति को जो सफलता मिलती जाती है वह गीण लगने लगती है और वह उनसे भी बड़े लक्ष्यों को पाने के लिये बैचैन होने लगता है। जैसे उदाहरण के तौर पर एलन मस्क दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक हैं लेकिन एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि वे असंतुष्ट हैं क्योंकि वे अपने लक्ष्य से पांच साल पीछे चल रहे हैं।

अब हमें प्रश्न यह है कि यह असंतोष सुख है या दुःख। एक अर्थ में यह सुख भी हो सकता है कि यदि असंतोष उन्हें आगे बढने की उेरणा देगा और वे उत्तरोत्तर प्रगति करेंगे। इसी संदर्भ में कहा भी गया है कि सौ संतुष्ट सूअरों से बेहतर है एक असंतुष्ट मनुष्य होना।

उम्मीदवार को इस  
हाशिये में नहीं लिखना  
चाहिये।  
(Candidate must not  
write on this margin)

लेकिन यह असंतोष कभी कभी इस स्तर पर भी पहुंच जाता है जहाँ सब कुछ पा लेने के बाद भी आप जीवन के उरि कृतज्ञ नहीं हैं, जो वाचुने हैं उसके उरि आभारी नहीं हैं, अपनी अभी तक कि यात्रा को आनंदित नहीं मानते फिर ऐसी सफलता का क्या अर्थ? क्योंकि लक्ष्य या रत्वादिशों तो रुक के बाद रुक बढती ही जायेंगी लालच की तो कोई सीमा ही नहीं है। इसी संदर्भ में एक शेर कहा गया है :-

हम बाहर खोजते तो दुनिया हमें घर पहुंचा देती  
हम घर के भीतर खोजे गए हैं, उस भटकन का कोई अर्थ नहीं है।

इसलिये लक्ष्य की रत्वादिश पूरा होने के बाद भी लालची प्रवृत्ति में यदि इंसान नाकशुश ही रहे तो यह किसी त्रासदी से कम नहीं है। लेकिन एक अन्य उरार की त्रासदी है भी है। कि आप जीवन में वो नहीं कर पाए जो आप करना चाहते थे। यह 'अधूरापन' कभी कभी व्यक्ति को जीवनभर कचोटता है। क्योंकि क्षमता होने पर भी क्षमता का विवेकशील उपयोग ना कर पाना बहुत बड़ी विडंबना है।

उम्मीदवार को इस  
हाशिये में नहीं लिखना  
चाहिये।  
(Candidate must not  
write on this margin)



6.

ये प्रचुरापन व्यक्ति के जीवन में कुंठा, हताशा, निराशा और नकारात्मकता लाता है। जो वह है और जो वह होना चाहता है इसके बीच का अंतर उसके जीवन तथा उसके आस पास के वातावरण को विषम बनाता है और नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है क्योंकि जो व्यक्ति खुद नहीं कर पाता कभी कभी वो इसकी आकांक्षाएँ दूसरे लोगों पर थोपने लगता है। उदाहरण के तौर पर कई माता-पिता अपने बच्चों को "कुछ विशेष" बनने के लिये बाध्य करते हैं क्योंकि वे अपने प्रचुरे सपनों को अपने बच्चों पर लादकर पूरा करना चाहते हैं। ये ना सिर्फ परिवार के माँदल को बुराब करता है बल्कि एक व्यक्ति के तौर पर उस बच्चे के अधिकारों का हनन भी करता है।

लेकिन हमें यहाँ इस पक्ष को भी देखना होगा कि क्या पूरे हुए सपने या प्रचुरे सपने हमेशा त्रासदी होते हैं या किसी कारणवश सुखान्त भी हो सकते हैं?

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।  
(Candidate must not write on this margin)

उदाहरण के तौर पर हिटलर का विस्तारवादी लक्ष्य, ब्रिटिश उपनिवेशवादी नीति या औसामा बिन लडिन की आतंकवादी रणनीतियाँ यदि पूरी हो जाती तो ज्यादा त्रासदी लाती क्योंकि ये रत्वाइशें मानवतावादी हितों के विपरीत थी। इसी प्रकार पोलियो के टीके की खोज करना, मैरी क्यूरी द्वारा रेडियोधर्मिता की खोज करना ये मानव हित के लक्ष्यों के वे सुखांत हैं जिनसे जीवन ज्यादा सरल व सख्त हुआ है।

उसलिये जीवन में लक्ष्यहीनता तो त्रासदी है ही लेकिन इसके बाद की स्थितियाँ त्रासद हैं या नहीं ये उस व्यक्ति का व्यक्तित्व, जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण और उस रत्वाइश की मानव हित के प्रति प्रासंगिकता तय करती है कि यह त्रासदी होगी या नहीं। इसीलिये प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में वो हर चीज करने का प्रयास करना चाहिये जो वह करना चाहता है:-

करना रे होय सो कर ले रे साथो  
मिनव जनम डेहले हो,  
तख चौरासी में भरत भरत  
थारे जबके मिली मेटले है  
करना रे होय सो म्हे रे साथो !!!

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।  
(Candidate must not write on this margin)